



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 300]

नई दिल्ली, बुध्दिवार, जुलाई 14, 1994/आषाढ़ 23, 1916

No. 300]

NEW DELHI, TAURSDAY JULY 14, 1994/ASADHA 23, 1916

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जुलाई, 1994

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (निर्गमन बैंककार)
नियम, 1994

सा.का.नि. 585(अ):— केन्द्रीय सरकार, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) की धारा 29 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ। (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (निर्गमन बैंककार) नियम, 1994 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख की प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं। इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) “अधिनियम” से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) अभिप्रेत है।

(ख) “निर्गमन का बैंककार” से ऐसा कोई अनुसूचित बैंक अभिप्रेत है जो निम्नलिखित सभी या कोई क्रियाकलाप करता है, अर्थात् :—

- (i) आवेदन और आवेदन धन का प्रतिग्रहण;
- (ii) आवंटन या मांग राशि का प्रतिग्रहण;
- (iii) आवेदन धन का प्रतिदाय;
- (iv) लाभांश या ब्याज वॉरंट का संदाय;

(ग) “निगमित निकाय” से कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 2 के खंड (7) में यथापरिभाषित निगमित निकाय अभिप्रेत है;

(घ) “प्रमाणपत्र” से बोर्ड द्वारा विनियमों के अधीन मंजूर किया गया या नबोद्ध रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र अभिप्रेत है;

(ङ) “निर्गमन” से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (मर्चेन्ट बैंककार) नियम, 1992 के नियम 2 के खंड (घ) में यथापरिभाषित निर्गमन अभिप्रेत है।

(ख) “विनियम” से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (निर्गमन बैंककार) विनियम, 1994 अभिप्रेत है;

(छ) “अनुसूचित बैंक” से भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की द्वितीय अनुसूची में सम्मिलित कोई बैंक अभिप्रेत है;

3. बिना रजिस्ट्रिकरण के किसी व्यक्ति द्वारा निर्गमन के बैंककार के रूप में कार्य का न किया जाना। (1) कोई व्यक्ति किसी निर्गमन के बैंककार के रूप में तब तक कोई क्रियाकलाप नहीं करेगा जब तक कि उसके पास इन विनियमों के अधीन बोर्ड द्वारा मंजूर किया गया कोई प्रमाणपत्र न हो :

परन्तु ऐसा व्यक्ति यदि उसने अधिनियम की धारा 12 की उपधारा (1) के पञ्चक के अधीन ऐसे रजिस्ट्रिकरण के लिए कोई आवेदन कर दिया है तो उसे आवेदन के निपटाए जाने तक निर्गमन के बैंककार के रूप में कार्य करना जारी रख सकता है।

4. प्रमाणपत्र मंजूर किए जाने या नवीकरण के लिए शर्तें। बोर्ड किसी निर्गमन के बैंककार को निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए प्रमाणपत्र मंजूर या नवीकृत कर सकेगा, अर्थात् :—

(क) वह निर्गमित निकाय के साथ जिसके लिए या जिसकी ओर से वह निर्गमन के बैंककार के रूप में कार्य कर रहा है, वैद्य रूप से आवश्यक एक करार करेगा जिसमें वह ऐसे निर्गमन के लिए जिसके लिए वह निर्गमन के बैंककार के रूप में कार्य कर रहा है, स्वयं के और निर्गमित निकाय के बीच के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का कथन करेगा;

(ख) वह विनियमों में उपबंधित रीति में रजिस्ट्रिकरण फीस की रकम का संदाय करेगा;

(ग) वह विनिधान कर्तव्यों की शिकायतों को दूर करने के लिए पर्याप्त कदम, शिकायत प्राप्त होने की तारीख से एक मास के भीतर उठाएगा और प्राप्त हुई शिकायतों की संख्या, प्रकृति और अन्य विशिष्टियों और उस रीति के बारे में जिसमें ऐसी शिकायतों को दूर किया गया है बोर्ड को सूचना देगा; और

(घ) मंजूर किया गया प्रमाणपत्र उसे मंजूर किए जाने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए विधिमान्य होगा।

5. प्रमाणपत्र का नवीकरण मंजूर किए जाने की शर्तें। बोर्ड किसी निर्गमन के बैंककार को नियम 4 के उपनियम (क) से (घ) में वर्णित शर्तों के अधीन रहते हुए प्रमाणपत्र का नवीकरण मंजूर कर सकेगा।

[फा. नं. 20(10)एसई/93]

पी. जे. नायक, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th July, 1994

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA

(BANKERS TO AN ISSUE) RULES, 1994

G.S.R. 585(E).—In exercise of the powers conferred by section 29 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Securities and Exchange Board of India (Bankers to an issue) Rules, 1994.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) “Act” means the Securities and Exchange Board of India Act 1992 (15 of 1992);

(b) “banker to an issue” means a scheduled bank carrying on all or any of the following activities namely :—

(i) acceptance of application and application monies ;

(ii) acceptance of allotment or call monies ;

(iii) refund of application monies ;

(iv) payment of dividend or interest warrants ;

(c) “body corporate” means a body corporate as defined in clause (7) of section 2 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);

(d) “certificate” means a certificate of registration granted or renewed by the Board under the regulations ;

(e) “issue” means issue as defined in clause (d) of rule 2 of the Securities and Exchange Board of India (Merchant Bankers) Rules, 1992.

(f) “regulations” means the Securities and Exchange Board of India (Bankers to an Issue) Regulations, 1994 ;

- (g) "scheduled bank" means a bank included in the second schedule of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934).

3. No person can act as banker to an issue without registration.—(1) No person shall carry on any activity as a banker to an issue unless he holds a certificate granted by the Board under the regulations :

Provided that such person may continue to act as a banker to an issue if he has made an application for such registration under the proviso to sub-section (1) of section 12 of the Act till the disposal of such application.

4. Conditions for grant or renewal of certificate.—The Board may grant or renew a certificate to a banker to an issue subject to the following conditions : namely :—

- (a) he shall enter into a legally binding agreement with the body corporate for or on whose behalf he is acting as banker to an issue stating therein the duties and responsibilities between himself and the body corporate for the issue for which he is acting as a banker to an issue ;

- (b) he shall pay the amount of fees for registration in the manner provided in the regulations ;

- (c) he shall take adequate steps for redressal of grievances of the investors within one month of the date of the receipt of the complaints and he shall keep the Board informed about the number, nature and other particulars of the complaints received and the manner in which such complaints have been redressed, and

- (d) the certificate granted shall be valid for a period of three years from the date of the grant of the same.

5. Conditions of grant or renewal of certificate.—The Board may grant the renewal of the certificate to a banker to an issue subject to the conditions mentioned in sub-rules (a) to (d) of rule 4.

[F. No. 20(10)SE/93]

P. J. NAYAK, Jt. Secy.

